International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(III), January - March, 2023, pp. 204-206

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में नारी सशक्तिकरणः साहित्यकारों के संदर्भ में

श्रीमती पन्ना बारेठ*

सार

हिन्दी साहित्य के ऐतिहासिक काल विभाजन में छायावाद का विशिष्ट स्थान है जिसके प्रमुख स्तम्भों में भी महादेवी वर्मा का विशिष्ट व दोहरा महत्वपूर्ण स्थान हैं। प्रथमतः जहां वे प्रसाद पंत निराला के त्रिकोण में चैथा कोण या उसकी धुरी थी वहीं एक महिला साहित्यकार होते हुए भी अपने साहित्य व कलाकर्म के माध्यम से तत्कालीन भारतीय सांस्कृतिक परिदृश्य में शोभनीय हुई जबकि उस समय भारत में स्त्रियों को शिक्षा प्राप्ति कुलीन वर्ग में भी यथार्थ से अधिक कल्पना की ही वस्तु थी। भारत की आधुनिक सरस्वती मा. सावित्रीबाई फुल द्वारा प्रज्वल्लित शैक्षिक ज्योति के प्रकाशमय परिवेश से लाभान्वित महादेवी वर्मा का महाकाव्य ही नहीं वरन् सम्पूर्ण साहित्य भी भारत की सांस्कृतिक धरोहर हैं। उन्होंने कविता को परिभाषित करते हुए कहा नारी विमर्श के क्षेत्र में उनकी अनेक कृतियों में नीहार रश्मि नीरजा दीपशिक्षा यामा व विशेषकर उनकी कविता मैं हैरान हूँ से भी बढकर श्रृंखला की कडियां के गहन समाजशास्त्रीय अध्ययन में महिला सशक्तिकरण की जडें पायी जाती हैं। साहित्यिक परिदृश्य में मुंशी प्रेमचन्द संस्थापित हंस पत्रिका के माध्यम से इसके तत्कालीन प्रकाशक राजेन्द्र यादव ने हिन्दी साहित्य में नार व दलित विमर्श का प्रारम्भ किया।

शब्दकोशः *साहित्य, साहित्यकार, प्रज्वलित, शैक्षिक, ज्योति, प्रकाशमय, परिवेश।*

प्रस्तावना

भारत में एक श्लोक प्रसिद्ध हैं, 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता' अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है वहां ईश्वर का निवास होता हैं।

नारी का जीवन बहुत ही संघर्ष से विरत है महिला साहित्यकार के लिए सबसे पहले बाहर संदर्भों में उसका आंतरिक समय होता है जहां वो जीती है और सांस लेती है और वही दूसरी और होती है समय की चुनौतियां जिससे वो बिल्कुल परे होती है उनके जीवन वे सृजन के बीच अनवरत की स्थिति बनी रहती है, उनकी राह आसान नहीं है उनकी राह में बहुत सी विचारधाराएं वे दुविधाएं हैं। साहित्य जब तक मौखिक परम्परा का हिस्सा था तब तक लेखन में स्त्रियों का योगदान बराबरी के स्तर पर रहा, परन्तु इतिहास के पन्नों में उनका जिक्र भी नहीं किया गया क्योंकि उन्हें कोई जगह नहीं मिली, अगर नारी का योगदान का मूल्यांकन साहित्य में करना हो तो वह किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। आज के दौर में महिलाओं ने पुरूष के मुकाबले साझेदारी निभाई हैं। महिलाओं के अंदर बढती चेतना और जागरूकता ने पारम्परिक छवि को तोडा हैं।

हिंदी साहित्य और नारी सशक्तिकरण

देखा जाये तो साहित्य में नारी की भागदारी जिस तेजी से हो रही है उसे देखते हुए नारी की अभिव्यक्ति की सामर्थ्य पर हैरान होने वाली काई बात नहीं रहेगी। भक्तिकाल में कई कवयित्रियों का उल्लेख कहीं कहीं देखने को भी मिलता हैं। जैसे कि गंगा, गौरी, सीता, सुमति, शोभा, प्रभुता, उमा, कुंवरि, उबीठा, गोपाली, गणेश देवरानी, कला, लखा, कृतगढी, मानुमती, सुचि, सतभामा जमुना, कोली, रामा, देवा, देभक्तन, विश्रामा, जुग कीकी, कमला, देवकी, हीरा, झाली, हरिचेरी पोषे भगत कलियुग युवती जन भक्त राज महिमा सब जाने जगत।

---

* सहायक आचार्य (हिन्दी), एस.एस.जी. पारीक महिला महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

इन कवित्रियों ने कविताएं लिखी थ परन्तु इनक कवितायें कहां गयी ये कोई नहीं जानता भक्ति काल की समस्त कवियित्रियां स्त्री काया जनित वेदना और विद्रोह को अभिव्यक्त करती है चाहे वो मीरा हो या लल्लेश्वरी भक्ति में भिगोई इनकी दमनकारी व्यवस्था के प्रति आक्रोश को सहज ही पहचाना जा सकता हैं। दुःख की बात ये है कि इनमें से कुछ कवयित्रियों की जानकारी है और कुछ कवयित्रियां मठवाद हो गयी। उनके बारे में या उनकी लिखी कविताओं के बारे में कहीं भी देखने को नही मिलता हैं। जहां मीरा के लिखे पद थे तो उन्हें शायद इसलिए भी मिट्टी में दबाना संभव नहीं था क्यूंकि उनके पद राजस्थान वे अन्य नीची जातियों के घर घर में गाये जाते थे। और यही काल लल्लेश्वरी का भी था। वह कश्मीर से थी और घर घर में उनकी कविताएं गाई जाती थी। जिन कविताओं का उल्लेख हमें देखने को नहीं मिला।

कबीर के काल में लोई भी कविताएं लिखा करती थी परन्तु कहां है लोई की रचनाएं किसी को नहीं पता कबीर को संकलित करने वाले अगर चाहते तो लोई की रचनाओं को भी संकलित कर सकते थे। तुलसीदास के साथ–साथ रत्नावली भी कवि थी, पर हिन्दी साहित्य के अभी तक के इतिहास में उनके अस्तित्व को नहीं दर्ज किया गया हैं। भक्ति काल में खास बात यह है कि पुरूष कभी स्त्री रूप में आराधना करते नजर आते थे तो कभी वे पुरूष हो जाते थे हैरान कर देने वाली बात है कि किसी पुरूष कवि के विवरण के साथ उससे सम्बन्धित स्त्री का उल्लेख कर दिया जाता था। उदाहरण के लिये रीतिकाल में घनानन्द और सुजान का उदाहरण लिया जा सकता है। घनानन्द के नाम से ही है.... पद से लिंग निर्धारण नहीं होता ..... ऊपर से आचार्य रामचन्द शुक्ल तर्क देते है कि चूंकि अपनी पूर्व प्रेयसी से घनानन्द को अत्यंत प्रिय रही होगी इसलिये वह उसका मोह ना छोड पाए। आज साहित्य की विभिन्न विधाओं में महिलाओं से कोई क्षेत्र अछूता नहीं रहा। महिला लेखन की सबसे बडी सीमा यह भी है कि वे आज भी पुरूष सतात्मक समाज में अपनी बेबाक अभिव्यक्ति का साहस नहीं जुटा पायी हैं। उनका दबा हुआ स्वर रूढयों की चादर ओढे हुए हैं। दबा हुआ स्वर यह भी उभरता रहा है कि स्थापित लेखक अपनी आत्मुग्धा और अपनी सिद्धहस्ता पूर्वाग्रह और खेमेबाजी के चलते नारी के लेखन को खारिज कर अपनी स्तरहीन रचनाओं को स्थापित करा लेते हैं। आजादी की लडाई के समय जो स्वर साहित्य में उभरा उसमें देशकालिक परिस्थितियों और देश प्रेम की अभिव्यक्ति साफ लक्षित होती है महादेवी वर्मा, सरोजिनी नायडू, सुभद्रा कुमारी चौहान, उषा देवी मिश्रा आदि कई लेखिकाओं ने अपने समय को अभिव्यक्ति दी। और उनके प्रति लिखी गयी कविताएं या अन्य सशक्त लेखन का योगदान हिंदी साहित्य को प्राप्त हुआ।

स्वतंत्रता के बाद नारी लेखन में मुक्ति के स्वर उभरे वह नारी जिसे पुरूषें ने सती सावित्री का झोला पहना रखा था। नारी एक स्वप्न लोक में बसी एक खूबसूरत देह थी। एक ऐसी देह जिसके अंदर कोई भावना नहीं होती, एक बेजान देह जो कभी किसी चीज की आशा नहीं करती। अपने अंदर भावनाओं को छुपा कर रखती हैं। जिसे पुरूष प्रधान बनकर स्त्री को अपने इशारों में नचा सकता है। नारी भावनाओं की यह अभिव्यक्ति जो कई सदियों से भीतर ही भीतर छटपटा रही थी और आज नारी लेखन में भी अभिव्यक्त हुई। क्यूंकि नारी ने ही नारी की पीडा को समझा और नारी ने ही उन्हें समझकर उनकी पीडा को शब्द दिए जो कि एक पुरूष नहीं समझ सकता नारी ने ही उनके जीवन की समस्त व्यथा को लिखा। मन्नू भंडारी, उषा प्रियवंदा चंद्र किरण सौनरिक्सा शशिप्रभा शास्त्री का लेखन नारी अस्मिता को तलाश हैं।

आज के समय में जहां तक देखा गया है कि भारत में महिलाओं की स्थिति ने पिछले कुछ सदियों में कई बडे बदलावों का सामना किया है महिलाओं ने प्राचीन काल में पुरूषों के साथ बराबरी के स्तरीय जीवन और सुधारकों द्वारा सामान अधिकारों को बढावा दिए जाने तक भारत में महिलाओं का इतिहास काफी गतिशील रहा। नारी साहित्य लेखन एक और स्वातः सुखाया है तो दूसरी ओर जन हिताय है नारी साहित्य इस परिवर्तन युग का शुभचिंतक हैं। महिला लेखन आज स्पर्धा के युग में चुनौती हैं। फिर भी उसे हर स्थिति का सामना करने में उसे किसी वैशाखी की जरूरत नहीं। अपितु वह स्वयं मार्ग ढूंढ स्वयं अपने हस्ताक्षर बना रही हैं। सयंत व शालीन बने रहकर सृजन करना भी एक चुनौती है। महिला रचनाकार ऐसा करती आ रही हैं। निर्भयतापूर्वक सोचना और लिखना होगा आज की यह जरूरत हैं।

हम चुनौतियों में तब ही सफल हो सकती है जब हम अपने सामाजिक सरोकार के हिसाब से किसी न किसी रूप में एक्टिविस्ट हो साथ में घर गृहस्थी भी सफलता से निभाएं। सृजन की शक्ति उसके पास है जो उसके लेखकीय सरोकार को नवीन अभिव्यक्ति की क्षमता देती आई हैं और देती रहेगी। इतना ही कहूंगी कि नारी धीरे–धीरे आत्मबोध अनुप्राषित हुई हैं। फिर भी वह अपने ढंग से प्रतिष्ठित होने के लिए संघर्षशील रही हैं। इसलिए विरोध–अवरोध तिरस्कार बहिष्कार को नकारते हुए उसे आगे आना होगा। तब ही समाज और राष्ट्र के प्रति अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकती हं और अपनी सार्थकता को सिद्ध भी। हमें ठोस चिन्तन का प्रमाण देना है व इस दंभ से बचना होगा कि चूंकि स्त्री है अतः स्त्री समस्याओं या भावनाओं को वही बेहतर समझ सकती हैं। वह सृजन के क्षेत्र में पैर रख रही है न कि किसी रणक्षेत्र में। नारी मुक्ति का संघर्ष लम्बा है और इस मुख्यतः स्वयं नारी को लडना है। लेकिन यह लडाई पुरूष वर्ग के विरूद्ध न होकर व्यवस्था के अन्तर्विरोधों व पुरूष प्रधान समाज से निथरे नारी विरोधि अवमूल्यों के प्रति होनी चाहिए। समाज व अपनी संस्कृति से जुडी वर्तमान परिवेश की चुनौतियां स्वीकार करके ही महिला सृजन सफल हो रहा है और होगा। समसामयिक काल में नारी समता की एक नई चेतना भारतीय समाज में व्याप्त हुई हैं। बहुत प्रसन्नता की बात है कि स्त्री लेखन की चर्चा अब हर जगह होने लगी हैं। यह निश्चय ही महिला रचनाकारों के बढते महत्व को रेखांकित करता हैं।

उपसंहार

अतः निष्कर्ष कहा जा सकता है कि नारी आदिकाल से ही पीडित एवं शोषित रही हैं पुरूष प्रधान समाज ने मान मर्यादा की आड में सदा उसे दबाकर रखना चाहा कभी घर की इज्जत कह कर तो कभी देवी कहकर चार दीवारों के अंदर कैद ही रखा इन्हीं परम्परागत पितृसतात्मक बेडियों को लांघने की लडाई है नारी सशक्तिकरण। आज के दौर में भारतीय संस्कृति में नारी को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है वह शिव भी है और शक्ति भी वह वो सभी कार्य कर सकती है जो एक पुरूष करता है वह एक पुरूष के समान उससे अधिक कार्य कर सकती है और करती भी हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आलोक श्रीवास्तव, स्त्री मन की चितेरी महादेवी (आलेख), फेमिना विकीपीडिया– नवम्बर 1918
2. सुभाष शर्मा, नारी विमर्श की गहरी जडे (आलेख), आजकल मासिक नई दिल्ली– मार्च 2021
3. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कडियां (संग्रह) लोकभारती नई दिल्ली– पृष्ठ 11
4. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कडियां (संग्रह) लोकभारती नई दिल्ली– पृष्ठ 41
5. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कडियां (संग्रह) लोकभारती नई दिल्ली– पृष्ठ 41
6. सुभाष शर्मा, नारी विमर्श की गहरी जडें (आलेख), आजकल मासिक नई दिल्ली– मार्च 2021
7. सुभाष शर्मा, नारी विमर्श की गहरी जडें (आलेख), आजकल मासिक नई दिल्ली– मार्च 2021
8. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कडियां (संग्रह) लोकभारती नई दिल्ली– पृष्ठ 97
9. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कडियां (संग्रह) लोकभारती नई दिल्ली– पृष्ठ 110
10. समाज वीकली – 24 अप्रैल 2019 (गूगल पेज)
11. सुभाष शर्मा, नारी विमर्श की गहर जडें (आलेख), आजकल मासिक नई दिल्ली– मार्च 2021
12. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कडियां (संग्रह) लोकभारती नई दिल्ली– पृष्ठ 143

❖◆❖